भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: डायरी का एक पन्ना कायपत्रिका को तिथि: ----------

संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टिफन तिथि:----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : X ब

प्रश्नोत्तर

प्र1.कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी, 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूण था ?

उ1.26 जनवरी, 1930 को गुलाम भारत म पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। तब यहाँ के लोगों ने उत्सव मनाने म खास उत्साह नहीं दिखाया था। 26 जनवरी, 1931 को उसको पुनरावृत्ति के अवसर पर वे पिछले साल को भी कसर निकाल लेना चाहते थे।

प्र2.सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था ?

उ2. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णदास पर था।

प्र3. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उ3.श्रद्धानंद पाक म विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्ह पकड़ लिया और अन्य लोगों को मारकर वहाँ से हटा दिया।

प्र4.लोग अपने-अपने मकानों व सावजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे ?

उ4. लोग अपने-अपने मकानों व सावजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर देश भक्ति को भावना का संकेत देना चाहते थे।

प्र5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था ?

उ5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को इसलिए घेर लिया था ताकि वहाँ लोग इकट्ठे न हो और ने झंडा न फहरा सक।

<u>प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों म)लिखिए –</u>

प्र1. 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ को गई ?

उ1. 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गई थी। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रुपया खच किया गया था। कायकताओं को उनका काय घर-घर जाकर समझाया गया था। बड़ा-बाज़ार के लगभग सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा

फहराया गया था। कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे मानो स्वतंत्रता मिल गई हो।

प्र2. ' आज जो बात थी वह निराली थी '-किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप म निराला है ? स्पष्ट कीजिए।

उ2. कानून भंग आंदोलन का काम जब से शुरु हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान म नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए - ओपन लड़ाई थी। लोगों म इतना उत्साह था कि निषेधाज्ञा लागू होने के बाद भी तीन बजे से ही मैदान म भीड़ जमा होने लगी थी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान म सभा के शुरु होने का इंतज़ार करने लगे थे। स्त्रियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सदारी की थी। लड़कियों ने गिरफतारी दी थी। वालंटियरों ने चुपचाप पुलिस की लाठियाँ सही थी। जहाँ-तहाँ झंडा फहराया गया था। भाषण हुए थे। आज़ादी की प्रतिज्ञा की थी।

प्र3.पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस म क्या अंतर था ?

उ3.पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला कि जनसभा करना गैरकानूनी होगा और एकत्रित होने पर गिरफ़्तारी की जाएगी। उधर इसके जवाब म कौंसिल की तरफ से यह नोटिस निकाला गया था कि मोनुमट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सवसाधारण को उपस्थित होना चाहिए। इस प्रकार दोनों नोटिस एक-दूसरे के विरोधाभासी थे। एक म भय दिखाया गया था तो दूसरे म भय दिखानेवाले को निभय होकर चुनौती देने को कहा गया था।

प्र4.धमतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?

उ4. धमतल्ले के मोड़ पर आते-आते जुलूस म भाग लेने वाले अनेक आंदोलनकारी घायल हो गए।पुलिस दनादन डंडे चलाने शुरु कर दिए। स्त्रियों पर लाठीचाज किया गया।दजनों स्त्रियाँ लहू-लुहान हुईं। जैसे-जैसे भीड़ बढ़ती गई, पुलिस का अत्याचार उग्र होता गया, जिससे जुलूस टूट गया।

प्र5. डॉ. दासगुप्ता जुलूस म घायल लोगों को देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फ़ोटो खीचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उ5. वे पूरे भारत को दिखा देना चाहते थे कि कलकत्तावासियों म कितना साहस है, साथ ही साथ वे विश्व को अंग्रज़ी हुकूमत की बबरता से भी अवगत कराना चाहते थे। बाद म यही फ़ोटो कोट म अपने साथियों के लिए सुबूत के तौर पर पेश करके वे उन्ह पुलिस लॉकअप से छुड़ा सकते थे। ये फ़ोटो आम नागरिक के दिल म जल रही आज़ादी की आग म घी का काम भी करते।

<u>प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों म)लिखिए –</u>

प्र1. सुभाष बाबू के जुलूस म स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

उ1. सुभाष बाबू के जुलूस के लिए स्त्री समाज ने बहुत तैयारी की थी। पुलिस के रोकने के

बावजूद स्त्रियाँ जगह-जगह से ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं । जब सुभाष बाबू का जुलूस मोनुमट के पास पहुँचा तो पुलिस ने भयंकर रूप से लाठीचाज करना शुरु कर दिया। सुभाष बाबू घायल हो गए और आगे नहीं बढ़ पाए। ऐसे म स्त्रियाँ मोनुमट की सीढ़ियों पर चढ़ी और उन्होंने वहाँ झंडा फहरा दिया । वे बहुत बड़ी संख्या म लाठीचाज की परवाह किए बिना बढ़ती रहीं और आज़ादी की घोषणा पढ़ने लगीं । जब सुभाष बाबू को पकड़कर लालबाज़ार लॉकअप म भेज दिया गया तो स्त्रियों का एक बड़ा हिस्सा विमल प्रतिभा के नेतृत्व म जुलूस बनाकर वहाँ से आगे बढ़ा ।

प्र2. जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?

उ2. जुलूस के लालबाज़ार आने पर उसका सामना बहुत बड़ी पुलिस फ़ौज से हुआ । पुलिस अभी भी रुक-रुककर डडे चला रही थी । करीब पौन घंटे बाद पुलिस की गाड़ी आई । जुलूस का नेतृत्व करनवाले बड़े-बड़े नेता जैसे वृजलाल गोयनका, जानकी देवी और मदालसा समेत 105 स्त्रियाँ भी गिरफ़्तार कर ली गई , थाने ले जिन्ह थाने ले जाकर बहुत मारा गया । कलकत्ता म आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ कभी गिरफ़्तार न हुई थीं । करीब दो सौ लोग घायल हुए।

प्र3. 'जब से कानून भंग का काम शुरु हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान म नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए – ओपन लड़ाई थी । 'यहाँ पर कौन-से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के संदभ म अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उ3. यहाँ अंग्रेजों द्वारा लागू कानून भंग करने की बात की गई है । जो हर हाल म आम भारतीय नागरिक को अपने ही देश म गुलाम बने रहने पर विवश कर रही थी और ये कानून आथिक समृद्धि के विरुद्ध थी । इन हालात म आम भारतीय का अपनी आज़ादी के लिए उठ खड़े होना और अपने हृदय की आवाज़ बहरे गोरों तक पहुँचना आवश्यक था ।अत: ऐसे कानूनों को भंग करना बिल्कुल न्यायपूण था । तत्कालीन कांग्रेस पार्टी ने सोच-समझ कर भारत को अंग्रेज़ों के शासन से मुक्त कराने के लिए कानून-भंग करने का निणय लिया था ।

प्र4. बहुत-से लोग घायल हुए , बहुतों को लॉकअप म रखा गया , बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूव बताया गया है । आपके विचार म यह सब अपूव क्यों है ? अपने शब्दों म लिखिए ।

उ4. हमारे विचार म यह सब अपूव इसलिए है क्योंकि इतनी बड़ी संख्या म लोगों ने पहले कभी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जुलूस नहीं निकाला, न ही पहले कभी इतने बड़े पैमाने

पर सरकार को खुला चैलज िदया गया था। पुलिस ने भी ू रता का रास्ता अपनाया। लाठी चाज िकया, भारी संख्या म लोग घायल हुए। उन्ह गिरफ़्तार िकया गया। सबसे बड़ी बात तो यह है िक इतनी भारी संख्या म स्त्रियां ने जुलूस निकाला और गिरफ़्तार हुईं।इससे पहले ऐसा कभी नहों हुआ था।